Carpenter's monthly newspaper

www.carpentersnews.com

कारपेंटर्स न्यूज़

R.N.I.No.MAHHIN/2005/16460 | Postel Regd. No. MCW/321/2025-27
Posted at Delisle Road, Mumbai-400013. On 20th of Every month | Published on Every 10 th day of the month

मासिक समाचार पत्र

मुंबई | अप्रैल 2025 | वर्ष : 20 | अंक : 05 | पृष्ठ : 12 | मूल्य : 2 रुपए

उमंग-उल्लास का त्योहार बैसाखी .... पेज - 2

उमंग-उल्लास का त्योहार बैसाखी

हमारे देश में अनेक त्योहार मनाए जाते है। कुछ त्योहार ऐसे हैं, जो पूरे देश में मनाए जाते हैं, तो कुछ त्योहार ऐसे हैं, जो किसी विशेष प्रांत में या कुछ प्रांतों में मनाए जाते हैं। कुछ पर्व अलग-अलग राज्य में अलग अलग नाम से जाने जाते हैं, जिन्हें मनाने का तरीका भी थोड़ा अलग हो सकता है। ऐसा ही एक अनूठा पर्व है बैसाखी, जिसे मुख्य रूप से पंजाब और उसके आस-पास के इलाकों में मनाते है।

बैसाखी सिख धर्म के लोगों का बहुत ही महत्वपूर्ण त्योहार है। सिख धर्म में यह पर्व नए साल का प्रतीक भी माना जाता है। इसी दिन सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इस अवसर पर गुरुद्वारों में विशेष पूजा की जाती है, जुलूस भी निकाला जाता है। लंगर का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें हर धर्म और वर्ग के लोगों को भोजन कराया जाता है। इस अवसर पर अपनी खुशी उमंग को प्रकट करने के लिए लोग पारंपरिक लोकनृत्य भांगड़ा और गिद्दा भी करते हैं। इसमें बच्चे भी बड़े उत्साह से हिस्सा लेते हैं।

बैसाखी पर्व फसल तैयार होने की खुशी को प्रकट करने से भी जुड़ा हुआ है। मार्च के अंत से लेकर अप्रैल माह में जब रबी की फसल (गेहूं, जौ, सरसों, चना आदि) तैयार हो जाती है तो किसान उसको खुशी की प्रकट करने के लिए बैसाखी पर्व मनाते हैं। बैसाख माह की पहली तिथि को मनाए जाने के कारण इस पर्व को बैसाखी नाम दिया गया है। बैसाखी पर्व, पंजाब के साथ-साथ अन्य प्रांतों में भी मनाया जाता है। असम में इसे बिहू, बंगाल में पोइला वैशाख, तमिलनाडु में पुथंडु, केरल में विशु के नाम से मनाते हैं। असम में इसे रोंगाली बिहु या वैशाख विहु के नाम से भी जानते हैं। जो नव वर्ष का पहला दिन होता है।

कैंची धाम में भक्तों के लिए अब शटल सेवा शुरू

कुमाऊं। कैंची धाम आने वाले भक्तों की भीड़ बढ़ने से उत्पन्न जाम की समस्या से निजात दिलाने पुलिस ने यातायात प्लान तैयार किया है। बाबा के भक्त अब शटल सेवाओं से कैंची धाम पहुंचेंगे। जाम से निजात दिलाने, सुगम आवागमन हेतु आईजी कुमाऊं रिधिम अग्रवाल व एसएसपी नैनीताल प्रहलाद नारायण मीणा ने व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

कारपेंटर्स न्यूज़

RNI NO. MAHHIN/2005/16460

विज्ञापन व प्रतियों के लिए संपर्क करें : 9320566633
Email: carpentersnews@gmail.com

मुंबई | अप्रैल 2025 | वर्ष : 20 | अंक : 05 | पृष्ठ : 12 | मूल्य : 2 रुपए

विश्वकर्मा योजना के लिए करेंगे जागरूक

वाराणसी। डीएम एस. राजलिंगम ने प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना में कम आवेदन संख्या वाले ट्रेडों के बारे में जागरूकता के लिए नगर निगम एवं समस्त ब्लॉक को निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जिला पंचायत राज अधिकारी और बीडीओ, प्रधान स्तर से 15 ट्रेड के आवेदनों का सत्यापन कराकर एक सप्ताह में रिपोर्ट दें। उपायुक्त उद्योग एवं अग्रणी बैंक प्रबंधक निरस्त आवेदनों की समीक्षा करें।

ताला कारीगर को आयकर विभाग ने थमाया 89 लाख टैक्स नोटिस

अलीगढ़। एक ताला कारीगर को आयकर विभाग से 89 लाख टैक्स का नोटिस भेजने का मामला प्रकाश में आया है। मोर्टिस लॉक्स में स्प्रिंग बनाने वाले योगेश शर्मा के पैन कार्ड पर 11 करोड़ से अधिक का कारोबार हो गया और इसके आधार पर आयकर विभाग ने 89 लाख 45 हजार रुपये की वसूली का नोटिस थमा दिया। नोटिस से पूरा परिवार सदमे में है। मीडिया खबरों के मुताबिक नौरंगाबाद निवासी योगेश शर्मा रात आठ बजे कारखाने से वापस लौटे तो पत्नी ने आयकर नोटिस दिखाया। उन्होंने नोटिस अपने पड़ोसी को दिखाया।

पता चला है कि उनके पैन व आधार कार्ड पर साल 2019-20 में 11.18 करोड़ रुपये का कारोबार किया गया है। इसका जीएसटीआर-एक भी दाखिल किया गया है लेकिन कारोबार के सापेक्ष रिटर्न फाइल नहीं किया गया है। आयकर विभाग ने योगेश शर्मा पर 89,45,184 रुपये की देनदारी नोटिस में निकाली है। आयकर विभाग खंड एक के अधिकारी दुर्गेश कुमार के मुताबिक आयकर विभाग को यह सूचना इनसाइट पोर्टल से मिली है। उसके अनुसार करदाता को नोटिस जारी किया गया है। एक सप्ताह के भीतर करदाता को जवाब दाखिल करना होगा। ताला कारीगर योगेश शर्मा ने बताया कि उनके पास वर्तमान में मोबाइल भी नहीं है। पैन और आधार का इस्तेमाल करके किसी ने मेरे साथ ठगी की है। किराए के कमरे में रहते हुए परिवार का पालन पोषण कर रहा हूं। मुझको न्याय दिलाया जाए। नौरंगाबाद निवासी ताला कारीगर योगेश शर्मा के पास बिजली बिल भरने का भी पैसा नहीं था, ऐसे में उसके घर का बिजली कनेक्शन कटा हुआ है। मोमबत्ती की रोशनी में काम करना उनकी मजबूरी है। अब आयकर नोटिस देखकर परिवार सदमे में है। योगेश शर्मा की पत्नी का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है। जूस विक्रेता मोहम्मद रसई को नोटिस के बाद आयकर विभाग को 15 पैन कार्ड पर करोड़ों के टर्न ओवर के संकेत मिले थे। आयकर अफसरों ने बताया कि नौकरीपेशा व महिलाओं को नोटिस जारी किया गया है।

जापान ने बनाई विशालकाय लकड़ी की 'रिंग'

मुंबई। दुनिया में विशाल लकड़ी की रिंग बनाने का रिकॉर्ड जापान ने हासिल कर लिया है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने इसकी पुष्टि की है। अगले महीने ओसाका में होने वाले वर्ल्ड एक्सपो 2025 का आयोजन इस 'ग्रैंड रिंग' के भीतर किया जाएगा। इसे जापानी वास्तुकला के सम्मान में बनाया गया है जो 61 हजार वर्ग मीटर से ज्यादा बड़ा है।

आर्किटेक्ट सोउ फुजिमोटो ने कहा कि ओसाका एक्सपो का 'ग्रैंड रिंग' एकता का प्रतीक है और जापान के वास्तुशिल्प इतिहास को सैल्यूट करता है। 53 वर्षीय फुजिमोटो ने रिंग की भव्य जालीदार बीम के नीचे कहा कि यह एक्सपो वास्तव में एक सुंदर, अनमोल अवसर है, जहां बहुत सी अलग-अलग संस्कृतियां और देश विविधता और एकता बनाने के लिए एक साथ एक जगह पर आते हैं। ग्रैंड रिंग के निर्माण के लिए पास के क्योटो में की मिज़ू मंदिर में प्रसिद्ध उभरे हुए मंच से प्रेरित लकड़ी के खंभों को जोड़ने की पारंपरिक तकनीकों का उपयोग किया गया है। उन्होंने कहा कि ग्रैंड रिंग के लिए लकड़ी का उपयोग करना एक टिकाऊ विकल्प है, उन्होंने पेड़ों द्वारा कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने का भी उल्लेख किया। जापानी देवदार और हिनोकी की लकड़ी, साथ ही मजबूत यूरोपीय लाल देवदार को भूकंप-प्रतिरोधी बनाने के लिए धातु से मजबूत किया गया है। लकड़ी के बीम एक ढलान वाली छत को सहारा देते हैं, जो अपने सबसे ऊंचे बिंदु पर 20 मीटर ऊंची है। हर पांच साल में अलग-अलग स्थानों पर आयोजित होने वाले वर्ल्ड एक्सपो में भाग लेने वाले देशों को अपनी तकनीकी और सांस्कृतिक ताकत दिखाने का मौका मिलता है।

कल्पवृक्ष की तरह पूजते हैं सल्फी पेड़ को

रायपुर। बस्तर अंचल के ग्रामीण जन सल्फी के पेड़ को कल्पवृक्ष मानते हैं, क्योंकि यह एक रसदार वृक्ष होता है। यहां के निवासियों के लिए यह पेड़ आर्थिक संसाधन का महत्वपूर्ण अंग होता है। सल्फी को आदिवासी प्रकृति प्रदत्त मानते हैं इसे ये आकाशवाणी, आकाशगंगा और आकाश पानी भी कहते हैं। ताड़ प्रजाति के कारयोटा यूरेंस यानी सल्फी के पेड़ से निकलने वाले रस को छत्तीसगढ़ में बस्तर बीयर कहा जाता है। आदिवासी आम तौर पर आंगन और खेत की मेड़ों पर सल्फी के पेड़ लगाते हैं। 40 फीट ऊंचा यह पेड़ नौ-दस साल का होने के बाद रस देना शुरू करता है।

स्थानीय बाजार में सल्फी का रस 40 से 50 रुपए लीटर बिकता है। कुछ आदिवासी सल्फी के रस से गुड़ भी बनाते हैं। कई परिवारों की रोजी रोटी इसी पेड़ से चलती है। जब किसी परिवार में अचल संपत्ति का बंटवारा होता है उसमें सल्फी पेड़ को भी शामिल किए जाते हैं। जब बेटी का विवाह होता है तब वर पक्ष को सल्फी पेड़ को दहेज में देने की प्रथा है। दंडाभी मारिया जाति के लोग अपने ही सल्फी वृक्ष के रस का पान करना उन्हें अच्छा लगता है। आदिवासी सल्फी वृक्ष को कामिनी कन्या वर्ण का मानते हैं, जिसकी पवित्रता का पूरा ध्यान रखा जाता है। इस पेड़ के रोपण, पेड़ से रस निकालने और सेवन में विधि विधान का पूरी तरह से पालन करते हैं। पेड़ के उपयोग में रस्म निभाने में कोई कमी नहीं करते। पेड़ से रस निकालने की प्रक्रिया एक जानकर व्यक्ति द्वारा ही सुनिश्चित किया जाता है। वृक्ष के आसपास रोज गोबर से लीप कर साफ सुथरा रखा जाता है और जरूरत पड़ने पर घेरा भी बनाई जाती है। 30 से 40 फुट तक ऊंचाई वाले इस वृक्ष से रस निकालने हेतु बांस का उपयोग किया जाता है जिसे टेंगी कहा जाता है। सल्फी को तुंबा या तुमड़ी में एकत्र की जाती है। एकत्र सल्फी के उपयोग के लिए पत्तों की कटोरी बनाई जाती है। सल्फी से संबंधित और अनेक धार्मिक मान्यताएं यहां प्रचलित हैं, जिसे अंचल के लोग आज भी विधि विधान से पूरी करते हैं। लेकिन अब बस्तर में सल्फी के पेड़ सूखते जा रहे हैं। छत्तीसगढ़ सरकार ने कभी सल्फी को काजू से तैयार होने वाली फेनी की तर्ज पर बेचने की योजना बनाई थी तो कभी इसकी टॉफी बनाने की बात कही। ये योजनाएं तो दूर की बात हैं, छत्तीसगढ़ सरकार सल्फी के पेड़ों को बचाने को लेकर भी बेपरवाह दिखती है। बस्तर कृषि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक राजाराम भंवर पिछले कई सालों से सल्फी के पेड़ों पर शोध कर रहे हैं। उनका मानना है कि ऑक्सिस्पोरम फिजियोरियम नाम के फंगस के कारण सल्फी के पेड़ सूख रहे हैं। यह फंगस पेड़ की उन जड़ों को अवरुद्ध कर देता हैं, जो पेड़ को खाना-पानी पहुंचाती हैं। संकट ये है कि मिट्टी के कारण होने वाली इस बीमारी का इलाज नहीं हो पा रहा है।

इंडिया वुड 2025 में एफएफएससी स्किल पवेलियन

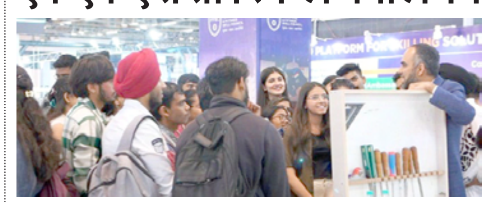

नई दिल्ली। फर्नीचर एंड फिटिंग्स स्किल काउंसिल ने इंडिया वुड 2025 में एक खास स्किल पवेलियन बनाया, जो सीखने, सहयोग और कौशल विकास का केंद्र बना। इस पैविलियन में फर्नीचर इंडस्ट्रीज से जुड़े लोगों ने ट्रेनिंग से फर्नीचर, इंटीरियर और इससे जुड़े सेक्टर में बदलाव लाने के बारे में चर्चा की। इस अवसर पर स्टूडेंट डिजाइन चैलेंज, रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ाने के साथ डिजाइन कॉलेजों के छात्रों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया, जहां उन्होंने नवीन दृष्टिकोण और रचनात्मक समाधान प्रस्तुत किए। वर्ल्डस्किल्स और इंडिया स्किल्स के प्रतिभागियों ने अपने बेहतरीन टेस्ट प्रोजेक्ट्स प्रदर्शित किए, जिससे उद्योग पेशेवरों को यह देखने का अवसर मिला कि कौशल विकास सीधे उत्पाद की गुणवत्ता और नवाचार को कैसे प्रभावित करता है। प्रतियोगिताओं के अलावा, छात्रों को फर्नीचर, इंटीरियर और संबद्ध क्षेत्रों में करियर के अवसरों पर गहन मार्गदर्शन दिया गया।

संकल्प की शक्ति अपरिमित है - स्वामी हरि चैतन्य पुरी महाराज

कामां। तीर्थराज विमलकुंड स्थित श्री हरि कृपा आश्रम के संस्थापक एवं श्री हरि कृपा पीठाधीश्वर व विश्व विख्यात संत स्वामी श्री हरि चैतन्य पुरी महाराज ने श्री हरिकृपा आश्रम में उपस्थित विशाल भक्त समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि संकल्प की शक्ति अपरिमित है। संकल्प कालजयी है संकल्प की गति अबाध हैं जहां संकल्प है, वहां कुछ भी असंभव नहीं है। पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की अभेद शक्ति भी मनुष्य के संकल्प को रोक नहीं सकी और व्यक्ति चन्द्रमा तक पहुंच गया। सागर की अथाह गहराई हो या एवरेस्ट का उच्चतम शिखर, संकल्प के आगे छोटा पड़ गया। संकल्प मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का सामूहिक निश्चय है, एक बार अगर ये शक्ति जग जाए तो सृष्टि की पूरी ताकत भी इसे परास्त नहीं कर सकती।

उन्होंने कहा कि धार्मिक कथाएं, पौराणिक गाथाएं, ऐतिहासिक घटनाएं सभी एक स्वर में संकल्प शक्ति रूपी इस महाशक्ति की क्षमता को प्रभावित करते हैं। किसी भी धार्मिक अनुष्ठान का प्रारंभ संकल्प मंत्र से ही होता है। अर्थात मनोवांछित इच्छा प्राप्त करने के लिए शुभ कार्य का आरंभ एक शुभ संकल्प से ही होता है। संकल्प शक्ति का यदि संधि विच्छेद किया जाए तो स्वयं कल्प होता है कल्प यानि कितने युग बितने के बाद कल्प आता है। यह बता रहा है कि मनुष्य किसी कार्य को असंभव इसलिए कहता है क्योंकि उसे लगता है कि यह कार्य उसके जीवन में पूरा नहीं हो सकेगा। गहराई से विचार करें तो समय की सीमा उसकी सामर्थ्य और शक्ति को तोड़ देती है लेकिन परिभाषा के अनुसार देखें व चेतना में भरें तो यह हमारी सोई हुई शक्तियों को जगा कर किसी कार्य को भी असंभव न मानते हुए पूरा करने की प्रेरणा देगा। आवश्यक नहीं है कि कर्म करने वाले को फल उसे इस जीवन में ही मिल जाए, हो सकता है कि उस संकल्प को पूर्ण होने में अर्थात लक्ष्य प्राप्ति में कई पीढ़ियां भी गुजर सकती हैं।

उन्होंने कहा कि हमारे शास्त्रों ने हमें मात्र संकल्प नहीं 'तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु' के आधार पर शिव अर्थात कल्याणकारी, सुंदर व सत्य संकल्प करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि आज हमारी, हमारे परिवार, देश, समाज की जो दुर्दशा हो रही है। विभिन्न प्रयास करने के बावजूद जिससे हम उबर नहीं पा रहे हैं। प्रयास करने के साथ साथ प्रभु से उनकी कृपा याचना से परिपूर्ण भाव सहित प्रार्थना अवश्य करनी चाहिए। परमात्मा हमारी वस्तुओं, पदार्थों, मान सम्मान इत्यादि का नहीं वह तो हमारी प्रेम व भावनाओं का भूखा है। प्रेम रहित दुर्योधन के अतिथ्य को त्याग कर विदुर की कुटिया में रुखा साग व केले के छिलके भी प्रेम सहित स्वीकार करता है। भीलनी के खट्टे मीठे झूठे बेर में उसे जो स्वाद आता है ऐसा तो अयोध्या व जनकपुर के विभिन्न व्यंजनों में भी नहीं आता। महाराज ने कहा कि मात्र मानव शरीर पाकर ही हम सच्चे अर्थों में मानव या इंसान कहलाने का अधिकारी नहीं बन जाते हैं, स्वयं को सुसंस्कारित करके समाज के लिए उपयोगी बनाएं। सदाचार पूर्ण जीवन बिताएं राष्ट्रीयता, नैतिकता व चरित्र को भी जीवन में महत्व दें।

जायका इंडिया का

सिंघाड़े का हलवा

सामग्री - सिंघाड़े का आटा-1 छोटा कप, चीनी-1 छोटा कप, पानी-5 छोटे कप, तेल या घी-6 बड़े चम्मच, इलायची पाउडर-आधा छोटा चम्मच, बारीक कटे बादाम-4, किशमिश-5, बारीक कटे काजू-5

विधि - सबसे पहले कड़ाही में घी अच्छे से गर्म करें। इसके बाद बारीक कटे बादाम, काजू डालकर धीमी आंच पर रोस्ट करें। फिर उसमें सिंघाड़े का आटा डालकर 5 से 10 मिनट तक धीमी आंच पर भूनें। जब आटा लाइट ब्राउन हो जाए, तो उसमें पानी, किशमिश और चीनी डालकर धीमी आंच पर रख दें। ध्यान रखें कि पानी अच्छे से सूख जाए। बीच बीच में हलवे को चलाएं। अब हलवा पूरी तरीके से तैयार है, अब इसे आप गरम-गरम सर्व करें।

जीरा आलू

सामग्री - उबले हुए आलू-3 या 4, रिफाइंड ऑयल-2 बड़े चम्मच, जीरा-1 बड़ा चम्मच, बारीक कटी हुई हरी मिर्च-2, काली मिर्च पाउडर-1 छोटा चम्मच, सेंधा नमक स्वादानुसार, बारीक कटा हुआ हरा धनिया-2 बड़े चम्मच

विधि - पहले एक कड़ाही में तेल डालकर गर्म करें। इसके बाद उसमें जीरा चटकाएं। फिर आलू को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर उसमें डाल दें। इसके बाद हरी मिर्च, काली मिर्च पाउडर और सेंधा नमक डालकर अच्छे से मिलाएं। धीमी आंच पर 5 मिनट तक ऐसे ही चलाकर पकाते रहें। इसके बाद आलू जब थोड़े कुरकुरे हो जाएं तो उसमें हरा धनिया डालकर सर्व करें। आप चाहें तो इसे ठंडी दही के साथ भी सर्व कर सकते हैं।

साबूदाना खिचड़ी

सामग्री - साबूदाना-1 कप, उबले आलू-2, तेल-3 चम्मच, जीरा-1 चम्मच, बारीक कटी हुई हरी मिर्च-3, काली मिर्च पाउडर-1/2 छोटा चम्मच, सेंधा नमक में भुनी हुई मूंगफली-1/2 कप, सेंधा नमक-1 छोटा चम्मच या स्वादानुसार

विधि - साबूदाना को धोकर 15-20 मिनट के लिए पानी में भिगो दें। एक कड़ाही में तेल डालकर जीरा चटकाए, फिर उबले आलू, सेंधा नमक, काली मिर्च पावडर, बारीक कटी हरी मिर्च, मूंगफली डालकर उसे अच्छे से चलाएं। 5 मिनट तक धीमी आंच पर उसे चलाते रहें। फिर साबूदाना से सारा पानी निकालकर उसमें मिक्स करें। इसे 5 मिनट के लिए ढककर रख दें। तैयार है गरम-गरम साबूदाना खिचड़ी।

आत्मनिर्भर भारत की धड़कन बनी खादी - मनोज कुमार

मुंबई। खादी और ग्रामोद्योग आयोग के अध्यक्ष मनोज कुमार ने कहा कि 10 वर्षों में खादी की बिक्री ने नया कीर्तिमान स्थापित किया है। खादी अब स्थानीय से वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बन रहा है। केवीआईसी के मुख्यालय मुंबई में आयोजित खादी दुकानों/कार्यशालाओं के टूल किट वितरण कार्यक्रम में उन्होंने उक्त बातें कही।

मनोज कुमार ने कहा कि देश विदेश में खादी के प्रति लोगों में आकर्षण बढ़ा है। प्रयागराज के महाकुंभ में 12 करोड़ की बिक्री के साथ खादी ने नया इतिहास रचा है। मनोज कुमार ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत विजन को साकार करने और युवाओं को रोजगार प्रदान करने की दिशा में खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने ग्रामोद्योग विकास योजना के तहत अपने इतिहास के अब तक के सबसे व्यापक और वृहद टूलकिट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया है। इसके तहत वर्चुअल माध्यम से कुल 16,377 टूलकिट और उपकरणों का वितरण किया गया, जिसमें 3,950 बी-बॉक्स, 7,067 विद्युत चालित चाक, 1,350 चर्म उत्पाद मरम्मत टूलकिट, 390 जूता निर्माण उपकरण, 420 इलेक्ट्रिशियन टूलकिट, 80 एसी मरम्मत टूलकिट, 300 प्लंबर टूलकिट, 60 मोबाइल रिपेयरिंग टूलकिट, 971 सिलाई मशीनें, 278 हैंडमेड पेपर मेकिंग मशीनें, 349 स्वचालित अगरबत्ती मेकिंग मशीनें, 60 पैडल चालित अगरबत्ती मेकिंग मशीनें, 320 टर्नवुड मशीनें, 180 वुडन टॉय मेकिंग मशीनें, 460 वेस्टवुड क्राफ्ट मशीनें और 292 कृषि आधारित खाद्य प्रसंस्करण मशीनें शामिल हैं। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने बताया कि केवीआईसी ने वित्तीय वर्ष 2024-2025 में अब तक 1,110 खादी संस्थाओं को संशोधित विपणन विकास सहायता (एमएमडीए) के अंतर्गत 215 करोड़ रुपये की अनुदान राशि जारी की है, जिससे लगभग 1,46,246 कारीगर लाभान्वित हुए हैं। इसके अलावा, आईएसईसी कार्यक्रम के माध्यम से 1153 खादी संस्थाओं को 40 करोड़ रुपये की अनुदान राशि का भी संवितरण किया जा चुका है। इसी क्रम में अतिरिक्त खादी संस्थाओं को 32.73 करोड़ रुपये की एमएमडीए अनुदान राशि खादी संस्थाओं को जारी की गई जिससे 3817 कारीगर लाभान्वित हुए । केवीआईसी अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि हम सभी को 'वोकल फॉर लोकल' के साथ-साथ 'मेक फॉर वर्ल्ड' के मंत्र को अपनाना होगा, तभी प्रधानमंत्री मोदी का 'लोकल से ग्लोबल' का विजन साकार होगा। उन्होंने खादी कारीगरों के लिए एक महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए बताया कि 1 अप्रैल 2025 से खादी कारीगरों के पारिश्रमिक में 20 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी। पिछले 11 वर्षों में मोदी सरकार ने खादी कारीगरों के पारिश्रमिक में 275 प्रतिशत की ऐतिहासिक वृद्धि की है। अब चरखे पर प्रति लच्छा कताई करने पर कत्तिनों को 15 रुपये मिलेंगे।

कार्यक्रम में ऑनलाइन माध्यम से खादी और ग्रामोद्योग आयोग के उत्तर जोन के सदस्य नागेंद्र रघुवंशी, पूर्वी जोन के सदस्य मनोज कुमार सिंह, एमएसएमई मंत्रालय से संयुक्त सचिव (एआरआई) विपुल गोयल, आर्थिक सलाहकार (एमएसएमई) सिमी चौधरी और केंद्रीय कार्यालय, केवीआईसी के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ साथ आयोग के देश भर के क्षेत्रीय कार्यालय से अधिकारी व कर्मचारी गण उपस्थित रहे।

NIKHIL
ADHESIVES
Mahacol
SINCE 1971
श्रीरामनवमी
PV STICK
SUPER HEATFIT
N3
MICA SPECIAL
JALVEER
MAHAQUICK
MP
German Technology
महाकोल की ओर से, राम नवमी की ढेर सारी शुभकामनाएं!
हर बंधन हो मजबूत और अटूट

हरीसन
सुविधा स्कीम
HARRISON
बनो हरीसन का
Mr. आनंद
रहो हमेशा आनंद में
HARRISON_KITCHEN_UTILITY
Find Us On :
जीतो आकर्षक उपहार
सुविधा स्कीम के तहत कारपेंटर भाईयों के लिए आकर्षक स्कीम
आज ही रजिस्टर करें और पाएं मौका अनेको उपहार जीतने का
@HARRISON_LOCKS
Find Us On :
नॉट:- ऊपर दर्शायी गई फोटो सिर्फ उपहार को दर्शाने हेतु है मिलने वाला उपहार इनमे से भिन्न हो सकता है : रंग मॉडल इत्यादि।
टोल फ्री नम्बर : 1-800-572-5795
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
www.harrisonlocks.com | email : Info@harrisonlocks.com
9599281937

HARRISON®
Glorious 75+ Years

घर घर हरीसन
अब हर घर में हरीसन

75+ वर्षों से कारपेंटर्स का सम्मान
हरीसन के संग सफलता की उड़ान!

हरीसन प्रोडक्ट पॉइंट अर्जित करने का तरीका किया और भी आसान
मात्र क्यू आर कोड को स्कैन करने पर पाए उपहार

हरीसन का नया QR स्कैनिंग फीचर – कारपेंटर्स के लिए आसान इनाम!

देश के भरोसेमंद ब्रांड हरीसन ने कारपेंटर्स के लिए QR स्कैनिंग फीचर लॉन्च किया है, जिससे उपहार जीतना अब और भी आसान हो गया है।

कारपेंटर्स को हरीसन प्रोडक्ट की पैकिंग में दिए गए QR कोड को स्कैन करना है, और उनके रजिस्टर्ड प्रोफाइल पर पॉइंट्स अपने आप जुड़ जाएंगे। अब प्रोडक्ट की कट्टिंग संभालने की जरूरत नहीं, बस स्कैन करें और इनाम पाएं।

यह पहल कारपेंटर्स की सहूलियत और प्रोत्साहन के लिए की गई है। हरीसन हमेशा अपने कारीगरों के साथ खड़ा है!

उपहार जीतने की प्रक्रिया

- स्टेप 1: मोबाइल मे हरीसन सुविधा एप्लीकेशन डाउनलोड करे, और अपनी ID बनाकर लॉगिन करे।
- स्टेप 2: प्रोडक्ट पैक के अंदर लगे QR CODE को सुविधा एप्लीकेशन मे स्कैन करे और MRP के बराबर पॉइंट इकट्ठा करे।
- स्टेप 3: दिये गये 7 उपहार के आधार पर अपने पॉइंट REDEEM करे, और उपहार जीते

Suvidha
iSoftCare Technology

प्ले स्टोर पर (HARRISON SUVIDHA APP) सर्च कर के हरीसन लोगो एप्लीकेशन अपने फ़ोन मे इंस्टॉल करे।

#harrison_carpentermeet

Find Us On : | Toll Free No.: 1-800-572-5795

Advt

Zubaan Ke पक्के ReWards
EURO 7000
SYNTHETIC WOOD ADHESIVE
कारपेंटर भाइयो के लिए
स्पेशल ऑफर
सिर्फ 210 Points पर पाइये
Cutter Machine अथवा Drill Machine
EURO 7000 WP 2in1
WATERPROOF ADHESIVE
टोकन / पाउच
15 Rs/-
टोकन / पाउच
+
पॉइंट / पाउच
1
पॉइंट / पाउच
EURO 7000 Extreme 3 HI-STRONG
HIGH PERFORMANCE ADHESIVE
टोकन / पाउच
25 Rs/-
टोकन / पाउच
+
पॉइंट / पाउच
2
पॉइंट्स / पाउच
Planet Power®
Global Expertise. Local Care
CUTTER
EC 4 Premium
Rated Input Power: 1200W
Rated Voltage: 220V~/240~
Rated Frequency: 50 Hz
Capacity: 110 mm
No-load Speed: 12,000 rpm
Net Weight: 2.8 kg
MRP: Rs. 3,408/-
अथवा
Planet Power®
Global Expertise. Local Care
IMPACT DRILL
EID 13 Premium
Rated Input Power: 750W
Rated Voltage: 220V~/240~
Rated Frequency: 50 Hz
Capacity: 13 mm
No-load Speed: 1,800 rpm
Net Weight: 2.1 kg
MRP: Rs. 4,114 /-
New Hammer Drill 13 mm
Terms & Conditions:
• यह Offer Limited समय के लिए ही है।
• इस Offer का लाभ उठाने के लिए “EURO7000 DIGITAL” Application Download करें और Points Scan करें।
SCAN KIJIYE
Google Play
App Store
www.euro7000.com

प्रकृति से सहज संबंधों का संदेश देता महापर्व सरहुल

झारखंड में अधिकांश पेड़-पौधों का सामाजिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक महत्व है, पर साल पेड़ का महत्व असाधारण है।

प्रकृति सृष्टि की अद्भुत संरचना है, परंतु धरती के इस स्वर्ग से मनुष्य का मोहभंग जारी है। ऐसा क्यों? क्योंकि हम विकास की जिस नई राह पर सवार हैं, वहां प्रकृति को रौंदकर सिर्फ आगे बढ़ने की होड़ मची है। धरती और आकाश के बीच फासले कम हो गए हैं, परंतु मनुष्य और प्रकृति के मध्य दूरियां बढ़ गई हैं। मगर वैश्वीकरण के इस युग में भी देशज संस्कृति ने न केवल खुद को बचाए रखा, बल्कि अपनी सकारात्मक शक्ति से प्रभावित भी किया है। प्रकृति का महापर्व सरहुल ऐसा ही एक त्योहार है, जिसे बाहा, खेखेल, बैंजा आदि कई नामों से जाना जाता है, जिन सबका एक ही अर्थ है– फूल/सखुआ का फूल। साल (सखुआ) वृक्ष के फूल को आराध्य मानकर यह पर्व मनाया जाता है।

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सरहुल महापर्व पर पूजा अर्चना की, इस अवसर पर उन्होंने राज्य में दो दिनों की छुट्टी की घोषणा भी की।

सरहुल पर्व के अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने पारंपरिक विधि विधान से पूजा अर्चना की।

वैसे तो झारखंड के अधिकांश पेड़-पौधों का अपना का महत्व असाधारण है। यह झारखंड का राजकीय वृक्ष होने के साथ ही अमृतपायी पेड़ भी है। यह प्रकृति के लिए तो वरदान है, साथ ही मानव समुदाय के लिए भी अमूल्य निधि है। इस पेड़ की जड़, धड़, छाल, पत्ती, फूल, तना सबका सामाजिक और वैज्ञानिक महत्व है। इसकी लकड़ी की मजबूती के कारण इसकी तुलना लोहे से की जाती है और अंग्रेज इससे 'आयरन वुड' कहा करते थे। रेलवे की पटरी हो या लकड़ी के पुल, हर जगह इसकी मजबूती के प्रमाण मिलते हैं। इनके पल्लव, पत्ते पवित्रता के संकेत हैं। इनसे बने पत्तल और दोने तमाम पूजा-त्योहारों में पवित्रता और शुद्धता के पात्र होते हैं। इनकी पत्तियां खेतों में खाद बनकर सोना उगलती हैं। इनके फूलों में एंटीबायोटिक तत्व होते हैं, जो विभिन्न रोगों से लड़ने के लिए प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। इनके छाल से जो गोंद निकलता है, उसका उपयोग धूप-धुना के रूप में किया जाता है। यह धूवन के रूप में पर्यावरण की शुद्धता और पूजा-पाठ के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है। और तो और, ज्यादातर ग्रामीण अंचलों में आज भी इसका प्रयोग बतौर दातून होता है।

यही कारण है कि आदिवासी जीवन संदर्भ में सरहुल महापर्व का विशेष महत्व है। आदिवासी ज्ञान परंपराओं के अनुसार, पहान अर्थात आदिवासी संस्कृति में विशिष्ट ज्ञान रखने वाला व्यक्ति मौसम का अनुमान कर वर्षा होने या न होने की भविष्यवाणी करता है, जो काफी हद तक विज्ञान सम्मत है। इस पर्व के बहाने आदिवासी संस्कृति की गौरवशाली परंपरा अखड़ा संस्कृति को भी समझना बेहद जरूरी है। अखड़ा, यानी सामूहिकता, जो प्रतीक है एकता का और एकता विकास का आधार है। अतः विकास से जुड़े रहने के लिए मानव सभ्यता को अखड़ा के मूल मर्म को भी समझना पड़ेगा। सरहुल मुख्य रूप से धरती और सूर्य के मिलन का महापर्व है। परंपरा के अनुसार, वैवाहिक संस्कार की रस्म पूरी होने के पश्चात ही प्रजनन क्रिया होती है। उसी प्रकार धरती माता जननी है, उसका हर वर्ष एक रस्म के अनुसार वैवाहिक संस्कार किया जाता है, यही संस्कार है सरहुल। तात्पर्य है कि धरती में नए बीज लगने लगते हैं। इसके बाद ही नए फूल-फल-पत्ते का सेवन किया जाता है। यह संस्कार सदियों से चला आ रहा है। आश्चर्य होता है कि पूर्वज अनजाने ही सही, कितने बड़े वैज्ञानिक, युगद्रष्टा व काल के पारखी रहे होंगे, जो मन में इन सब विचारों को सुरक्षित एवं संरक्षित किए हुए थे। वास्तव में, यह पर्व न केवल जनजातियों के लिए प्रासंगिक है, बल्कि पूरे मानव समाज के लिए भी मार्ग प्रशस्त करता है। जो प्रकृति से विमुख होते जा रहे हैं, उन्हें यह याद दिलाता है कि हमारा अस्तित्व प्रकृति पर ही टिका है।

– जिंदर सिंह मुंडा,
असिस्टेंट प्रोफेसर, डीएसपीएमयू

सामाजिक समरसता का प्रतीक है सरहुल

सरहुल केवल एक पर्व नहीं है, बल्कि यह प्रकृति और जीवन के बीच संतुलन का प्रतीक है। यह उत्सव हमें यह समझाता है कि मानव जीवन का अस्तित्व प्रकृति के साथ गहराई से संबंधित है, और इसे संरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है। झारखंड समेत पूरे देश में सरहुल का उत्साह और उमंग हर वर्ष बढ़ती जा रही है, और यह पर्व हमें अपनी जड़ों से जोड़ने का कार्य करता है।

सरहुल झारखंड में मनाए जाने वाले एक महत्वपूर्ण त्योहार के रूप में जाना जाता है, जिसे पूरे राज्य में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दिन आदिवासी समुदाय नए साल का स्वागत करते हैं। सरहुल के अवसर पर प्रकृति अपने नए स्वरूप में नजर आती है, जब पेड़ों पर नए फूल और पत्ते खिलने लगते हैं। 'सरहुल' नाम दो शब्दों से मिलकर बना है झ 'सर', जिसका अर्थ है सखुआ या साल का फूल, और 'हुल', जिसका अर्थ है क्रांति। इसे सखुआ फूल की क्रांति का पर्व भी कहा जाता है। यह त्योहार चैत्र महीने की अमावस्या के तीसरे दिन मनाया जाता है, हालांकि कुछ गांवों में इसे पूरे महीने भर मनाने की परंपरा है। इस दिन लोग अखाड़े में नृत्य और गायन करते हैं और पूजा-अर्चना में भाग लेते हैं। सरहुल का अर्थ 'साल फूल' की पूजा करना है। इस पर्व के दौरान साल के वृक्षों की विशेष पूजा की जाती है, क्योंकि इन्हें प्रकृति का प्रतीक माना जाता है। इसे धरती की पूजा और नवजीवन का उत्सव भी कहा जाता है। इस दिन गांव के सरना स्थल (पवित्र उपवन) में पारंपरिक पूजा-अर्चना का आयोजन होता है। पूजा के समय ''पाहन'' (गांव का पुजारी) साल वृक्ष की डालियों से देवी-देवताओं की आराधना करते हैं और समुदाय के लिए सुख-समृद्धि की प्रार्थना करते हैं। सरहुल का त्योहार पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी प्रदान करता है। इस दिन लोग नदी, तालाब, जंगल और धरती माता की पूजा करते हैं और उनके संरक्षण का संकल्प लेते हैं। इस पर्व पर 'हडिया' (चावल से बना पेय) और पारंपरिक व्यंजन भी तैयार किए जाते हैं।

सरहुल के अवसर पर झारखंड के रांची, गुमला, खूंटी, लोहरदगा और सिंहभूम जिलों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। राजधानी रांची में एक भव्य जुलूस निकाला जाता है, जिसमें हजारों लोग पारंपरिक परिधानों में सजे-धजे होकर ढोल-नगाड़ों के साथ उत्सव में शामिल होते हैं। इस दौरान आदिवासी नृत्य और गीत प्रस्तुत किए जाते हैं, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को उजागर करते हैं। सरहुल का मुख्य संदेश प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करना और सामुदायिक एकता को प्रोत्साहित करना है। यह पर्व हमें पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा प्रदान करता है।

चैत्र नवरात्र : मां दुर्गा के उपासना का पर्व

वासंतिक नवरात्र, मां शक्ति की उपासना के नौ दिन मन की शुद्धि और जीवन की समृद्धि की कामना से जुड़े होते हैं। व्रत और पूजा-अर्चना के माध्यम से स्वयं को साधने के प्रयास करने का यह पावन पर्व है। नवरात्र, जीवन को हर तरह से उन्नत बनाने का समय है।

वासंतिक या कहें चैत्र नवरात्र में पूरे परिवेश में नई चेतना का संचार हो रहा होता है। खिलती प्रकृति के मौसम में आदिशक्ति को साधने का यह उत्सव हमारे भीतर नया उत्साह जगाता है। प्रकृति से जुड़ा सब कुछ दैवीय-सा लगता है। पेड़ों पर फूटती नई कोपलों में नवसृजन की आहट होती है। कोयल की मीठी कूक हर ओर ऊर्जा बिखेर रही होती है। सचमुच, वासंतिक नवरात्र का यह समय ही नवजीवन का संचार करने वाला है। आस्था के भाव संग मन की ऊर्जा उपार्जित करने का परिवेश बनाता है। नवरात्र के उपवास और आस्था से जुड़ी सोच से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। संयम, नियम के पालन से शरीर और मन की शुद्धि होती है। शक्ति की उपासना से जुड़ी आस्था से उपजा शुद्धता का यह भाव सजग और चेतन अस्तित्व से जोड़ता है। शांत, स्थिर और सधा हुआ विश्वास मन को बल देने वाला होता है। मां दुर्गा की आराधना के नौ दिन भीतर की सकारात्मक ऊर्जा से साक्षात्कार करने का उत्सव बनकर आते हैं। असल में यह पर्व मन की प्रफुल्लता, स्फूर्ति और तेजस्विता को बल देता है। दुख तकलीफ से मुक्ति और मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए मां दुर्गा की उपासना, स्त्रियां पूरे मन से करती हैं। अपने लिए ही नहीं, अपने परिवार की कुशल कामना के लिए मां से आशीर्वाद मांगती हैं।

अपने चेतनामयी अस्तित्व के लिए प्रार्थना करती हैं। हालांकि आज भी महिलाओं को बहुत से मोर्चों पर जाग्रत होने की दरकार है। महिलाओं के सामने घर के भीतर और बाहर जितनी भी परेशानियां आती हैं, उनकी एक बड़ी वजह अपने ही अस्तित्व को लेकर सजग न होना ही है। हर अच्छे-बुरे व्यवहार के प्रति स्वीकार्यता का भाव सही नहीं होता। विवेक रूपी अस्त्र का प्रयोग कर अपने जाग्रत अस्तित्व को समाज के सामने लाना बहुत आवश्यक है। नवसृजन का उल्लास बिखेरती प्रकृति के बीच भगवती दुर्गा की उपासना का यह उत्सव वास्तव में ऐसी सोच को पुष्ट करने वाला है। आस्था भरे भावों को वासंतिक छटा के माहौल में उम्मीद और सकारात्मक सोच का साथ भी मिलता है।

चैत्र नवरात्र, धार्मिक आस्था और अध्यात्म से ही नहीं जीवन के कई व्यावहारिक पक्षों से जुड़े दिन भी हैं। ऋतु परिवर्तन के समय में स्वच्छता और संयमित दिनचर्या जरूरी है। विक्रम संवत की शुरुआत के समय आने वाला यह नौ दिन का उत्सवीय अनुष्ठान वैज्ञानिक चिंतन के तार्किक पक्ष का आधार लिए है। मां शक्ति के पूजन के साथ ही बहुत से व्यावहारिक पहलू जुड़े हैं। प्रार्थना, जप और ध्यान नकारात्मक विचारों से दूर रखते हैं, मन-मस्तिष्क को स्थिरता देते हैं। सात्विक आहार, उपवास और सधी दिनचर्या शरीर और मन को डिटॉक्स करती है। यह अनुशासित जीवनशैली स्वास्थ्य और सक्रियता बनाए रखती है। मौसम के मुताबिक अपनों की संभाल देखभाल करने वाली स्त्रियां सदा से ही इन वैज्ञानिक बातों को भी आस्था के भाव संग समझती आई हैं। मौजूदा दौर में भी महिलाओं का यह भाव-चाव कायम है।

हमारे यहां शक्तिस्वरूपा के रूप में बेटियों के पूजन की रीत है। व्यावहारिक और धार्मिक धरातल पर जुड़ी आस्था संग सधी दिनचर्या के साथ नौ दिनों तक देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। सर्दी के पूरी तरह खत्म होने और तपिश के मौसम की शुरुआत के समय नियमपूर्वक मां आदिशक्ति के नौ रूपों को नमन कर व्रत-अनुष्ठान किए जाते हैं। एक ओर परिवर्तन के इस काल में प्रकृति नवीन हो जाती है तो दूसरी ओर मन श्रद्धा के भावों से भरा होता है। बदलते परिवेश में ये दिन भीतरी परिवर्तन लाने की शक्ति देते हैं।

चैत्र नवरात्र के पहले दिन से नववर्ष की शुरुआत होती है। ऋतुओं का यह संधि काल शारीरिक सेहत ही नहीं, मन का स्वास्थ्य भी बिगाड़ता है। ऐसे में मां दुर्गा की उपासना का यह उत्सव आध्यात्मिक और पारंपरिक पर्व तो है ही, अपने सामर्थ्य को पहचानने का अवसर भी है। मन-मस्तिष्क को सबल रखने के लिए शक्ति साध लेने का समय है। स्त्रियां अपनी सृजनशील सोच से परिवार ही नहीं, पूरे परिवेश को थामती आई हैं। अपनों को ही नहीं, परायों को भी संभालने की सोच रखती हैं। गहराई से देखा-समझा जाए तो मातृशक्ति का यही भाव घर-परिवार को थामे हुए है। संयमित, संस्कारित जीवन का आधार है।

देश-विदेश में हनुमान जी के अनोखे मंदिर

भारत में हनुमान जी के अनेक मंदिर है। हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर देश-विदेश के कुछ प्रतिष्ठित और अनूठे हनुमान मंदिरों के बारे में यहां बता रहे है।

● श्री आंजनेय मंदिर, मलेशिया

यह मंदिर मलेशिया के पोर्ट डिक्सन में स्थित है। अपने साथ जुड़ी रहस्यमय कहानियों के कारण आंजनेय मंदिर दुनिया भर में प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि मंदिर में रखी हनुमान प्रतिमा खुद ही अपना चेहरा रामेश्वरम मंदिर (भारत देश में स्थित) की और मोड़ लिया था। ऐसा कहा जाता है कि वर्ष 1996 में एक विदेशी फोटोग्रापार आंजनेय मंदिर की तस्वीरें क्लिक कर रहा था। जब वह कुछ और तस्वीरें क्लिक करने के लिए वापस लौटा तो उसने हनुमान जी की मूर्ति के शीष की दिशा में बदलाव देखा। यह देखकर वह अचरज में पड़ गया। उसने वहां उपस्थित लोगों से यह बात कही और तस्वीरें दिखाई तो सभी लोग इस चमत्कार से दंग रह गए। ज्ञातव्य है कि रामेश्वरम भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है और इनकी स्थापना भगवान श्री राम के द्वारा की गई मानी जाती है।

● बाला हनुमान मंदिर, गुजरात

खाला हनुमान मंदिर, जिसे श्री बाल हनुमान संकीर्तन मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। गुजरात के जामनगर में रणमल झील के दक्षिण पूर्व में स्थित है। इस मंदिर में भगवान राम, सीता जी, लक्ष्मण जी और हनुमान जी की मूर्तियां हैं। 1 अगस्त, 1964 से मंदिर परिसर में दिन रात राम धुन 'श्री राम जय राम, जय जय राम' का जाप होता रहता है। इस चौबीसों घंटे चलने वाले अनुष्ठान को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है। स्थानीय लोगों की मंदिर में गहरी आस्था है और उनका मानना है कि यह मंदिर उन्हें प्राकृतिक आपदाओं और जीवन के अन्य संकटों से बचाता है।

● जाखू मंदिर, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के जाखू में 8100 फीट की ऊंचाई पर मौजूद यह अत्यंत प्राचीन और जाग्रत हनुमान मंदिर, रामायण काल का बताया जाता है। इस मंदिर में 108 फीट ऊंची हनुमान जी की मूर्ति है। इस मंदिर और हनुमानजी को यह विशेष प्रतिमा देखने के लिए देश के कोने कोने से श्रद्धालु आते हैं। मान्यता है कि रावण के साथ युद्ध के दौरान जब लक्ष्मण जी मूर्छित हो गए थे और हनुमान जी उनके लिए संजीवनी बूटी लेने जा रहे थे, तभी उनकी नजर वहां तप कर रहे एक यक्ष ऋषि पर पड़ी। हनुमानजी जय क्लांत और संशय में थे। संजीवनी बूटी की सही जानकारी हासिल करने के लिए वे यहां कुछ समय के लिए ठहरे थे। यक्ष ऋषि के नाम पर ही अपभ्रंश होता हुआ, इस मंदिर का नाम जाखू मंदिर पड़ गया।

● पंचमुखी हनुमान मंदिर, पाकिस्तान

पाकिस्तान के कराची में स्थित पंचमुखी हनुमान मंदिर दुनिया के सबसे पुराने हनुमान मंदिरों में से एक माना जाता है। यह मंदिर लगभग 1500 साल पुराना है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार वनवास के दौरान भगवान राम उस स्थान पर आए थे, जहां यह मंदिर बना हुआ है। सदियों पहले खुदाई में यहां हनुमानजी की मूर्ति मिली थी। श्रद्धालुओं का मानना है कि यहां यह मूर्ति दैवीय शक्ति से प्रकट हुई थी। इसलिए यहां भव्य मंदिर बना दिया गया। साल 2019 में यह हनुमान जी की 9 अन्य मूर्तियां प्राप्त हुई थीं। इस मंदिर के प्रति श्रद्धालुओं में जिज्ञासा और आस्था बढ़ती ही जा रही है। पंचमुखी हनुमान मंदिर को पाकिस्तान में राष्ट्रीय विरासत का दर्जा भी मिला हुआ है।

● दत्तात्रेय मंदिर प्रांगण, त्रिनिडाड-टोबैगो

त्रिनिदाद -टोबैगो देश के कारापीचैमा नामक स्थान में स्थित दत्तात्रेय मंदिर 9 जून 2003 को खोला गया था। इस मंदिर में हनुमानजी को 85 फीट ऊंची मूर्ति को प्राण प्रतिष्ठा की गई है। साथ ही मूर्ति के आधार स्थल पर एक छोटा हनुमान मंदिर, दत्तात्रेय और अनघा देवी की प्रतिमाएं, राज राजेश्वरी, गणपति की प्रतिमा और शिवलिंग की भी स्थापना की गई है। भारत के बाहर मौजूद हनुमान जी की यह सबसे बड़ी प्रतिमाओं में से एक है। दक्षिण भारत को प्रविड़ वास्तुकला शैली में इस हनुमान प्रतिमा का निर्माण किया गया है। मुख्य मंदिर में प्रवेश करने से पहले भक्तों के पैर धोने के लिए कंक्रीट से निर्मित हाथी की दो विशाल प्रतिमाओं से पानी उपलब्ध कराया जाता है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक गुंबद है, जिसमें सात अलग-अलग रंगों में विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्र बजाते हुए संगीतकारों की प्रतिमाएं मौजूद है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक-गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा द्वारा 306, दिघे नगर को आप हाउसिंग सोसायटी, फितवाला रोड, एलफिन्स्टन (वेस्ट), मुंबई-40013 से प्रकाशित एवं एस आर पब्लिकेशन, मोहन अर्जुन कम्पाउंड, गाला नम्बर-8, 9, 10, घर्टनपाढा, वैशाली नगर लास्ट बस स्टॉप, नियर भारत गैस गोडाउन, दहिसर (ईस्ट), मुंबई- 400068 से मुद्रित। संपादक - गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा* RNI NO. MAHHIN/2005/16460 मो. 09320566633. (सभी विवादों का निपटारा न्यायक्षेत्र केवल मुंबई न्यायालय के अधीन होगा. *पी. आर. बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)

OZONE®

अब वो वाले नहीं सिर्फ 'O' वाले फिटिंग्स चलेंगे।

जब बात किचन और फर्निचर फिटिंग्स की हो, तो समझौता क्यों? ग्राहक को चाहिए मजबूत, भरोसेमंद और शानदार फिटिंग्स, जो उनके घर को सुंदर बनाए और इस्तेमाल में आसान हों। यही कारण है कि अब वो वाले नहीं सिर्फ **'O'** वाले फिटिंग्स चलेंगे।

एक अच्छा किचन या फर्निचर सिर्फ दिखने में सुंदर नहीं होना चाहिए, बल्कि आसानी से चलने वाला, मजबूत और सुविधाजनक भी होना चाहिए। जब आप ओज़ोन फिटिंग्स लगाते हैं, तो न सिर्फ किचन और फर्नीचर का लुक बदलता है, बल्कि हर चीज़ का इस्तेमाल भी पहले से बेहतर हो जाता है।

स्लिम प्रो अग्रोटेक ड्रावर सिस्टम

अब किचन को दीजिये एक प्रिमियम लुक स्लिम प्रो अग्रोटक ग्लास विद LED के साथ।

- **फुल एक्सटेंशन** से आसान एक्सेस
- **सोफ्ट क्लोज** के साथ स्मूथ और साइलेंट मूवमेंट
- **50,000 साइकल टेस्टेड** लम्बे समय तक चलने का भरोसा

अब रणबीर कपूर और कृति सेनन के साथ ओज़ोन ला रहा है- 'O' मोमेंट्स।

युनिवर्सल मैजिक कॉर्नर

ब्लाइंड कॉर्नर में अब जगह नहीं जाएगी बेकार।

ओज़ोन की स्मार्ट फिटिंग्स से किचन के कोनों का हो बेहतर इस्तेमाल– **मैक्सिमम स्टोरेज, ईजी एक्सेस**

छोटे किचन में भी अब होगी बड़ी जगह की फीलिंग।

इंस्टॉलेशन आसान, परफेक्शन की गारंटी

कारपेंटर्स के लिए ओज़ोन फिटिंग्स सिर्फ टिकाऊ ही नहीं, बल्कि इंस्टॉल करना भी बेहद आसान है। कम मेहनत में बेहतरीन रिज़ल्ट, यानी आपका काम जल्दी और बिना किसी परेशानी के पूरा होगा। और जब इंस्टॉलेशन शानदार होगा, तो ग्राहक बार-बार सिर्फ आपको ही बुलाएगा।

ओज़ोस्टार्स–हुनर की पहचान, मेहनत का इनाम!

आपकी मेहनत को पहचानने और पुरस्कृत करने के लिए ओज़ोन लाया है, ओज़ोस्टार्स लॉयल्टी प्रोग्राम, जहाँ आपको मिलेंगे कई शानदार फायदें जैसे–

- **हर फिटिंग स्कैन करें और पॉइंट्स कमाएं**– जितना ज्यादा इंस्टॉल, उतने ज्यादा पॉइंट्स
- **सीधे बैंक अकाउंट या UPI ट्रांसफर से इनाम पाएं**– कोई झंझट नहीं, सीधा फायदा
- **बिना किसी देरी के सीधे पैसे रिडीम करें**– मेहनत का सच्चा इनाम, बिना किसी रूकावट

अब देर मत करो! ओज़ोन से जुड़ो और अपने काम को नया स्टाइल दो!

OZO STARS
एक पहल, अपनों के साथ!

Android   iOS

दिए गए **QR** कोड को स्कैन करें और आज ही ओज़ोस्टार्स ऐप डाउनलोड करें।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
18002020204

OZONE
अब वो वाले नहीं,
सिर्फ O वाले फिटिंग्स चलेंगे!
50,000
साइकल्स टेस्टेड
सोफ्ट क्लोज़
OZONE INDIA
किचन फिटिंग्स । वार्डरोब फिटिंग्स । बेड फिटिंग्स
ऐड फिल्म देखने के लिए QR स्कैन करें